पार्ट 3

प्रश्न 14. पाठयांशमे सम्मिलित पत्रहीन नग्न गाछ क कवि यात्री जीक रचना संसारसँ परिचय कराउ।

उत्तर :– प्राचीन भारत वा प्राचीन ग्रीसमे सब दिन कवि शब्दक प्रयोग द्रष्टा, क्रांति स्रष्टा, सर्वज्ञ, नियन्ताक अर्थमे होइत रहल। एहि अर्थमे कोनो कवि आदि एहिसँ ओ जे कोनो भाव सब व्यक्त कैलनि, जे किछु, कोनो विषय पर विचार कैलनि तकरे महत्व देल जाइत रहल। यात्री जी की सब लिखलन्हि, कोना की कहलनि, तकर महत्व एक कविरूप मे बुझबाक थिक।

यात्री जीक पूरा नाम छलनि बैद्यनाथ मिश्र यात्री। हिनक जन्म 11 जून 1911 ई0 मे तरौनी गाम मे भेल छलनि। किछु दिन गाममे त किछु दिन मातृक सतलखा मे रहला। काशीमे संस्कृतक अध्ययन कैलनि। एकर बाद ओ बौद्ध भिक्षु भ गेलाह आ लंका चल गेलाह। यात्रीजी विश्वसक कतेको भाषाक अध्ययन कैलनि। हिन्दीमे नागार्जुन नामसँ प्रगतिवादी कवि आ लेखक रूपमे अखिल भारतीय नाम–यश अर्जित कयलनि। पुनि अपन कौलिक संस्कारके स्वीकार कैलनि आ मातृभाषा मैथिलीक भण्डार के समृद्ध कयलनि। हिनक निधन 5 नवम्बर 1998 ई0 के भ गेलनि।

यात्री जीक मैथिलीमे प्रकाशित कृति अछि काव्य संग्रह चित्रा 1949 ई0, पत्रहीन नग्न गाछ 1967 ई0 एकर अतिरीक्त 80 सँ किछु अधिके स्फूट कविता विभिन्न पत्र–पत्रिकामे प्रकाशित अछि। मैथिलीमे उपन्यास पारो (1942 ई0) नवतुरिया (1954 ई0) बलचनमा (1966 ई0) कथा निबन्ध सेहो पत्र पत्रिकामे प्रकाशित अछि।

हिन्दीमे लगभग तीन दर्जन पोथी प्रकाशित छन्हि। जाहिमे बाबा बटेसर नाथ, दुखमोचन, नई पौध, रतिनाथ की चाची, बलचनमा, बरूण के बेटे, कुम्भीपाक, इमरतिया, उपन्यास प्रमुख अछि। युगधारा, सतरंगे पंखोवाली, प्यासी पथराई आँखे, हजार–हजार बांहोवाली, तालाब की मछलियाँ, भूल जाओ पुराने सपने आदि कविता संग्रह चर्चित ओ प्रशंसित अछि।

मैथिली साहित्यमे यात्री जाक नाम अविष्मरणीय भ गेल अछि। गद्य आ पद्यमे, उपन्यास आ कवितामे। क्रांतिकारी कवि आ उपन्यासकारक रूपमे यात्री जीक पहिल उपन्यास अछि पारो। पारोके प्रकाश भेला पर मिथिलामे जे प्रतिक्रिया भेल ताहिमे पं0

Scanned by CamScanner

त्रिलोक नाथ झाके कथ्य छलनि स्वच्छन्द प्रोफेसर हाथ पैर, दन्तावलि पूर्वहि तोड़ि गेल। आब दुर्भाग्यसँ सम्प्रति पारो कपारो फोड़ि देल। एतय स्वच्छन्द प्रोफेसर सँ कन्यादान क लेखक प्रो0 हरिमोहन झा सँ संबंध अछि। पारोक संबंधमे प्रो0 श्रीकृष्ण मिश्रक टिप्पणी रहनि पारोक कथावस्तु ततेक निम्न स्तरक अछि जे हमरा समाजक साहित्य नहि भ सकैछ। मुदा प्रसिद्ध मैथिली इतिहासकार डॉ0 जयकान्त मिश्र एहि विचार सभक खण्डन करैत पारोके आ बलचनमा सँ बेसी सफल मानलनि। आधुनिक कालमे तीन शाक्तिक प्रधानता अछि ज्ञानशक्ति, धनशक्ति आ बलशक्ति। मैथिल समाजक स्त्रीके अदौ सँ एहि तीनू शक्ति सँ, पुरूष प्रधान समाज वंचित करैत आबि रहल छल। मुदा विज्ञानक ज्ञानसँ आ सामाजिक चिन्तक साहित्यकारक सत् प्रयास सँ एहि दिशामे बेस सफलता भेटल। पूर्वमे मैथिल समाज रूढ़िवादी परम्परासँ टस–मस होमय लेल तैयार नहि। एहि दिशामे प्रथम योगदान देलनि प्रो0 हरिमोहन झा आ तकर बाद यात्री जी स्त्रीक वैवाहिक समस्या पर कठोरतासँ प्रहार कैलनि आ सफल भेलाह। पारो आ नवतुरिया ओकरे परिणाम थिक।

पारो के रचनाकाल धरि मैथिली स्त्रीगण अपन दुर्दशाक कारण पुरूष वर्गके मानि रहल छलीह। पुरूषक समाजमे एकाधिकार छलन्हि। ई एक अद्भुत संयोग जे पारोके प्रकाशन वर्ष 1946 ई0 मे अंग्रेजी साहित्यमे सेहो स्त्री सशक्तिकरणक एक अद्भुत पोथी द सेकेन्ड सेक्स प्रकाशित भेल। एहि पोथीक लेखिका सिनमे द बुआक अनुसारे स्त्रीक दुर्दशाक कारण पुरूष वर्ग अछि। एहि पोथीक प्रकाशन सँ संसार भरिमे हड़कम्प मचि गेल। हुनक कथ्य अछि वस्तुतः स्त्री कोनो तरहे पुरूष सँ कम तर नहि होइछ। यात्री जी अपन पारो आ नवतुरियामे, स्त्री के स्त्री बनयबाक प्रकृयाके अद्भूत रूपे रेखांकित कैलनि अछि। पारोके प्रकाशित होइते मैथिल पुरूष वर्गमे हड़कम्प मचि गेल। यात्रीक विरूद्ध परम्परावादीक मोर्चा खुलल, मुदा यात्री अडिग रहला।

यात्री जी देखलिन मैथिल समाजमे अनमेल–विवाह, वृद्ध विवाह नारी शोषणक मूल समस्याक जड़ि बड्ड गहीर धरि छलैक। रूढ़वादिताक कारण समाज दिनो–दिन जर्जन भ रहल अछि ते तत्कालीन समाजक साहित्यकार सभ मिलिके सुधारक प्रयास कैलनि। यात्रीक पारो जतय वृद्ध विवाहक कथा पर आधारित फ्रॉयडवादी मनोविश्लेषणात्मक उपन्यास अछि। त नवतुरिया मार्क्सक साम्यवादसँ प्रभावित अछि। एहू मे वृद्ध विवाहक समस्या अछि, मुदा निदान साम्यवदी विचार पर आधारित अछि।

Scanned by CamScanner

महाकवि यात्री जीक दू–टा काव्य संकलन प्रकाशित अछि जाहिमे चित्रा 1949 ई0 मे आ पत्रहीन नग्न गाछ 1967 ई0 मे। हिनक पत्रहिन नग्न गाछ पर 1968 ई0 मे साहित्य अकादमी पुरस्कार प्राप्त भेलनि। यात्री कविता देवीके राजमहलसँ निकालि गरीबक आँखिकर कोर धरि पहुँचा देलनि। कविक स्वप्नमे ई जे स्वप्न देखलाह से आई सत्य भ रहल अछि। यथा–

तोर मन दौड़ैत छह कोठाक दिस

पैघ–पैघ धनीक दिस दरबा दिस

गरीबक दिस ककर जाइत छै नजरि

के तकै अछि हमर नोरक धार दिस?

कवि जे ललकारा देलनि त अनेक शताब्दीसँ गरीबके चिढ़ाबैत राजप्रसादक गुंबज आइ धराशायी भ गेल। युग–युग सँ पूजित बाबा बैजनाथ पचकल लोढ़ा बनि गेलाह। चामुण्डाक तरूआरि भोथ भ गेलनि, वेद पुरान फूसि भ गेल। श्रमिक वर्गमे जागृति आयल, श्रमजीवीक जयगान होमय लागल, हाथक क्षमता सत्य सिद्ध भेल। कवि एतबे पर रूकैत नहि छथि। कविक ई आव चित्राक बादोक कविता सभमे क्रमशः आर अधिक मुखर भेल अछि। हिनकर रचना सभक सम्बन्धमे सुप्रसिद्ध समालोचक प्रो0 रमानाथ झा के कहब छन्हि ई साम्यवादी साहित्यक विवेचन ठेठ मैथिली भाषामे, बन्धनहीन छन्दमे कएल से हिनक काव्य वैशिष्य अवश्य थिक, किन्तु यदि आओर मूल रूपे हिनक काव्य प्रवृत्तिक विश्लेषण कैल जाय तँ हिनक कविताक ओ स्थल अत्यन्त उत्कर्षपूर्ण प्रतीत होइत अछि, जाहिठाम ई अपन वाद क प्रचारक व्यक्तित्वके त्यागि अकृत्रिम भावे अपन रागात्मक अनुभूतिक अभिव्यक्ति करैत छथि। वस्तुतः यात्रीक ओहने चित्तवृत्तिक द्योतक रचना हिनक सर्वश्रेष्ठ रचना थिक। एहन रचनामे अन्तिम प्रणाम, गामक चिट्ठी हिमगिरीक उत्संगमे कृतिका नक्षत्रमे भावना, सिनुरिया आम आदि कतेको कविताक नाम गनाओल जा सकैछ। हिनक अन्तिम प्रणाम के मार्मिकता हृदयके झकझोड़ि दैत अछि–

कर्मक फल भोगथु बूढ़ बाप

हमटा सन्तति, से हुनक पाप

ई सोचि हौन्हु जनु मनस्ताप

Scanned by CamScanner

अनको विसरक थिक हमर नाम

माँ मिथिले ई अन्तिम प्रणाम।

माँ मिथिलेके भले ई अन्तिम प्रणाम नहि भेल परंच रूढिवादी इत्तिवृत्तात्मक काव्यके धरि अवश्य हिनक प्रगतिवादी कविताक अन्तिम प्रणाम सिद्ध भेल। भले गाम घरक लोक हिनक नाम विसरि गेल होइन, किन्तु मैथिलीक आधुनिक कालक इतिहासमे नाम अमिट छापके किओ नहि विसरि सकैत अछि।

हिनक बूढ़वर आ विलाप कविता ओहन धरातल दिस संकेत दैछ जाहिमे परम्परागत उपमानक अछैत नव नव अप्रस्तुतक प्रयोग नवीन परिवेशमे अद्भूत गौरबके अभिव्यंजित करैत अछि। जाहिमे व्यंग्यात्मक तीक्ष्णता सुधारवादी भावनाके इंगित करैत अछि।

बूढ़वर कविताक अंश देखू

माथ छलनि औन्हल छाँछ जकाँ

जीह गाँजक गोलही माँछ जकाँ

दाँत ने रहनि निदन्त रहथि

बूड़ि रहथि घोंघा बसन्त रहथि

ओहिना यात्री जीक विलाप शीर्षक कवितामे विधवाक यथार्थ चित्रण करैत अपन हृदयगत करूणाके एहिमे अभिव्यक्त क देने छथि–

हम पइलि छी टूटल पूल जकाँ

मौलेल बिनु सूँघल फूल जकाँ

आगि छूवै छी तँ जरैत ने छी

माहूर खाइ छी तँ मरैत ने छी

भुस्साक आगि जकाँ नहुँ–नहुँ

जरै छी मने मन हमहूँ

Scanned by CamScanner